CHAPTER 6

उषा

PAGE 37, प्रश्न - अभ्यास - कविता के साथ

12:1:6:प्रश्न - अभ्यास - कविता के साथ:1

कविता के किन उपमानों को देखकर यह कहा जाता है कि उषा कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्दचित्र है?

<u>उत्तर</u>: उषा कविता में कवि ने गाँव की सुबह का एक गतिशील शब्द-चित्र खींचा है जो अद्‌वितीय है। कवि ने प्रकृति की गति को शब्दों में बदलने के लिए एक अद्भुत प्रयोग और प्रयास किया है। निम्न झांकी ग्रामीण जीवन की गतिशील झांकी को दर्शाती है:
राख से लीपा हुआ चौका है,सिल है और स्लेट की कालिमा पर चाक से रंग मलते अदृश्य बच्चों के नन्हें हाथ हैं **।**कवि के अनुसार यह एक ऐसे दिन की शुरुआत है,जहां रंग है,गति है और भविष्य की आभा है**।**

12:1:6:प्रश्न - अभ्यास - कविता के साथ:2

भोर का नभ

राख से लीपा हुआ चौका

(अभी गीला पड़ा है)

नयी कविता में कोष्ठक, विराम चिह्नों और पंक्तियों के बीच का स्थान भी कविता को अर्थ देता है। उपर्युक्त पंक्तियों में कोष्ठक से कविता में क्या विशेष अर्थ पैदा हुआ है? समझाइए।

उत्तर: कोष्ठक में लिखी गई पंक्ति ”अभी गीला पड़ा है” ये ऐसा अर्थ दे रही है कि चौक की राख से हुई लिपाई अभी-अभी समाप्त हुई है। यदि आप इस पंक्ति को भोर से जोड़ते हैं, तो ऐसा लगता है कि सूरज उगने से पहले रात का रंग आसमान से बाहर आने लगा है। इसलिए आकाश का रंग राख की तरह धूसर हो गया है। जिसे ओस से गीला कर दिया गया है। यानी वातावरण में नमी अभी भी मौजूद है। कवि ने गाँव में भोर के समय चूल्हे जलाने वाली महिलाओं की सुंदर तस्वीर का वर्णन किया और इसे "भोर" के साथ मिलान करते हुए पुष्टि की कि वह अद्भुत है।

PAGE 37, अभ्यास - अपनी रचना

12:1:6:प्रश्न - अभ्यास - अपनी रचना:1

अपने परिवेश के उपमानों का प्रयोग करते हुए सूर्योदय और सूर्यास्त का शब्दचित्र खींचिए।

उत्तर: सुबह सूरज का उगना ऐसा लगता है जैसे यह आकाश और धरती के बीच की जगहों को अपने सुनहरे रब की रोशनी से भर रहा है। सभी अपना दिन शुरू करते हैं। दिन धीरे-धीरे चलता है। जैसे सूर्यास्त के समय हम अपनी वेशभूषा बदलते हैं और सो जाते हैं। उसी तरह, सूरज हल्के लाल परिधान पहनकर सोने के लिए तैयार हो जाता है। जिसे देखकर, हम सभी अपने दैनिक काम निपटा कर सोने की तैयारी करने लगते हैं।

PAGE 37, अभ्यास - आपसदारी

12:1:6:प्रश्न - अभ्यास - आपसदारी:1

सूर्योदय का वर्णन लगभग सभी बड़े कवियों ने किया है। प्रसाद की कविता 'बीती विभावरी जाग री ' और अज्ञेय की 'बावरा अहेरी' की पंक्तियाँ आगे बॉक्स में दी जा रही है। 'उषा'

कविता के समानांतर इन कविताओं को पढ़ते हुए नीचे दिए गए बिंदुओं पर तीनों कविताओं का विश्लेषण कीजिए और यह भी बताइए कि कौन -सी कविता आपको ज़्यादा अच्छी लगी और क्यों?

❖ उपमान ❖ शब्दचयन ❖ परिवेश

बीती विभावरी जाग री! अंबर पनघट में डुबो रही- तारा-घट ऊषा नागरी। खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा किसलय का अंचल डोल रहा, लो यह लतिका भी भर लाई- मधु मुकुल नवल रस गागरी अधरों में राग अमंद पिए, अलकों में मलयज बंद किए- तू अब तक सोई है आली आँखों में भरे विहाग री। *-जयशंकर प्रसाद*
भोर का बावरा अहेरी पहले बिछाता है आलोक की लाल-लाल कनियाँ पर जब खींचता है जाल को बाँध लेता है

सभी को साथः
छोटी-छोटी चिड़ियाँ, मँझोले परेवे, बड़े-बड़े पंखी
डैनों वाले डील वाले डौल के बैडौल
उड़ने जहाज़,
कलस-तिसूल वाले मंदिर-शिकर से ले
तारघर की नाटी मोटी चिपटी गोल धुस्सों वाली उपयोग-सुंदरी
बेपनाह काया कोः
गोधूली की धूल को, मोटरों के धुएँ को भी
पार्क के किनारे पुष्पिताग्र कर्णिकार की
आलोक-खची तन्वि रूप-रेखा को
और दूर कचरा चलानेवाली कल की उद्दंड चिमनियों को, जो
धुआँ यों उगलती हैं मानो उसी मात्र से
अहेरी को हरा देंगी।
- *सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन 'अज्ञेय'*

<u>उत्तर:</u> कवितायें तो तीनो ही उत्कृष्ट हैं,किन्तु मुझे “जयशंकर प्रसाद”जी की ‘बीती विभावरी जाग री ’ निःसंदेह इन सबमें सबसे अच्छी लगी ।इस कविता के उपमानों की बात करें तो प्रकृति का जितना सुन्दर मानवीकरण प्रसाद जी ने इस

कविता में किया है, वैसा अन्य दोनों कविताओं में देखने को नहीं मिलता है।

<u>उपमान:</u> अब इसी कविता में प्रसाद जी ने अम्बर को एक पनघट के समान बताया है तो उषा को एक स्त्री और तारों को घड़े के समान बताया है। ओस से भरी लता एक युवती है तो पत्तों से भरी डाली को प्रसाद जी आँचल के समान बताते हैं। वो कहते हैं कि लता रूपी युवती फूलों रुपी गागर में पराग रूपी शहद भर लाई है।

इस तरह के उपमानों का प्रयोग कर प्रसाद जी ने कविता में प्राण डाल दिए हैं,ये रचना जितनी जीवंत लगती है,उतनी अन्य दो कवितायें नहीं लगती हैं।

<u>शब्द-चयन:</u> प्रसाद जी के शब्द चयन ने कविता के सौन्दर्य में चार चाँद लगा दिए हैं ।जैसे:बीती विभावरी,तारा-घट उषा नागरी,खग-कुल कुल-कुल सा,किसलय का अंचल,मधु मुकुल नवल रस गागरी,अमंद.अलकों,मलयज आदि शब्दों का प्रयोग कर प्रसाद जी ने कविता में गेयता का गुण डाल दिया है।

<u>परिवेश:</u> विषय तो तीनों ही कविताओं का एक ही है: उषाकाल,लेकिन स्थिति और परिवेश तीनो की अलग है। “उषा” कविता में कवि ने गाँव की भोर को चित्रित किया है । प्रसाद

जी ने “बीती विभावरी” में पनघट, नदी और लता का चित्रण किया है। ”बावरा अहेरी” के कवि ने पक्षीवृन्दों,मंदिर और बाग का चित्र चित्रित किया है।